

एको ओंकार सत्गुरु प्रसाद : प्राण प्यारे साईं मैया की जय

श्री साईं चरित्र चालीसा

दोहा

श्री रघुवर के पद कमल, बार बार सिर नाइ।

वरणउ सतिगुर मिल यश, जो सेवक सुखदाय ॥

श्री सीयराम पद प्रेम, दाता परम उदार ।

जय जय मैगसिचन्द्र प्रभु, रसिक सन्त रिझवार ॥

जय साईं सुखदेवी नन्दन ।

प्रेम निधि रघुवर उर चन्दन ॥

मधुर भक्ति के परम उपासी ।

शील सनेह सिन्धु सुखरासी ॥

श्री रोचल राजकुमार प्यारे ।

श्री आत्माराम आंगन उजियारे ॥

सूफी कुल शिरमोर स्वामी ।

(श्री) अविनाशचन्द्र चरण अनुगामी ॥

मीरपुर सिन्धु को पावन कीनो ।

बाल रूप में दर्शन दीनो ॥

रूप निहार मगनु महतारी ।

नाचत गावत दे दे तारी ॥

बाल केल रस मोद अपारा ।

तात मात सुख देवन हारा ॥

श्रीखण्डि चन्द नाम सुखधामा ।

परम मधुर सुख सिन्धु ललामा ॥

घास पालने धाय झुलावे ।

हरि हरि नाम मधुर रट लावे ॥

नित्य मध्यान्ह झूलने आवे ।

सुन किलकार नाम सुख पावे ॥

गुर सेवा हित गोबर लावे ।

ठण्ड धाम से नहीं घबरावे ॥

गुर सेवा प्राणनि जे प्यारी ।

ले गुर गोद आशीष उचारी ॥

चिरु जीवो मेरे नन्हें बालक ।

भक्त भूप रसिकनि प्रति पालक ॥

नेही नाम राम अनुरागी ।

सिन्धु देश की किस्मत जागी ॥

कथा कीर्तन मौज मचाकर ।

रस वरसायो रस रत्नाकर ॥

जप साहिब रस सार विचारे ।

बन बन घूमें रस मतवारे ॥

नैननि नेह खुमारी छाई ।

रट रसना नितु सिय रघुराई ॥
सतिगुर प्यास में गेह त्यागा ।
दिव्य लगनि उत्कट वैरागा ॥
अकस्मात कोट कांगड़े आये ।
अविनाश चन्द्र चरण चित लाये ॥
पूरण सत्गुरु दर्शन पावा ।
रोम—रोम रस आनन्द छावा ॥
तन्मय होकर सेवा कीन्ही ।
युगल मन्त्र दीक्षा गुर दीन्ही ॥
रस समाज की झांकी देखी ।
भए विवश परहरी निमेखी ॥

विरह व्यथा नस नस भर गई ।

वहझांकी हृदय धरि लई ॥

रैन दिवस श्री जू नाम पुकारे ।

भोजन नींद की सुरति विसारे ॥

जीह नाम और लोचन नीरा ।

निरखि मगन भए श्रीरघुवीरा ॥

सतिगुर आज्ञा सिर पर धारी ।

आये अपने देश मंझारी ॥

मीरपुर धाम धन्य भयो ऐसे ।

अवध वृन्दावन धन्य हैं जैसे ।

वसे एकांत प्रेम रस छाके ।

जग वहिंवार तनक नहीं ताके ॥
मिलन बोलन का नहिं अवकाशा ।
एक जुगल दर्शन अभिलाषा ॥
अति अनुराग न जानहिं कोई ।
रोम—रोम रस प्रेम समोई ॥
युगल को जीवनु सर्वसु जाना ।
लीला ललित करहिं नितु गाना ॥
आनन्दकन्द अलबेले स्वामी ।
सिय रघुवर पद नित्य नमामी ॥
प्रभु कृपा सत्संग सजाया ।
राम श्याम को लाड़ लड़ाया ॥

भक्त चरित्र गान कर साई ।

प्रेम प्रफुल्लित रहहिं सदाई ॥

पावन शिक्षा सबन को दीनी ।

सबकी मति हरि रस महि भीनी ॥

जहां तहां रस सरित बहाई ।

नाम कथा फूली फुलवाई ॥

सिन्धु देश को पावन करके ।

आये ब्रज हरषि हिय भरके ॥

वृन्दाविपिन में गेह बनायो ।

सुखनिवास ताको नाम धरायो ॥

सुखनिवास सिय राम का प्यारा ।

तहां युगल का नित्य विहारा ॥
बड़े—बड़े सन्त साईं घरि आये ।
सुखनिवास लखि अति हरिषाये ॥

दोहा :— वृन्दाबन नेही निर्मल, श्रीरघुवर प्रेम अखण्ड ।
सन्त चरण पंकज मधुप, स्वामि गरीब श्रीखण्ड ॥
जय जय युगल किशोर की, जय जय मैगसि नाम ।
जय जय जय साईं अमां, जय जय जय सीआराम ॥

जै साईं अमां

.....

